

**हिमालयी नदियाँ और प्रायद्वीपीय नदियाँ** भारत में पाई जाने वाली दो अलग-अलग प्रकार की नदियाँ हैं, जिनकी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। हिमालय की नदियाँ हिमालय में बर्फ और ग्लेशियरों से पोषित होती हैं, और उनका मार्ग लंबा होता है, ढलान अधिक होती है, प्रवाह अधिक होता है, और पूरे वर्ष अधिक विश्वसनीय जल प्रवाह होता है। उनका जलग्रहण क्षेत्र भी बड़ा होता है, और उनमें से अधिकांश बारहमासी नदियाँ हैं।

दूसरी ओर, प्रायद्वीपीय नदियाँ दक्कन के पठार से निकलती हैं और अपेक्षाकृत समतल भूभाग से होकर बहती हैं। उनके मार्ग छोटे होते हैं, ढाल कम होती है और प्रवाह धीमा होता है। वे मानसून की वर्षा पर भी अधिक निर्भर होती हैं, और इस प्रकार उनके जल प्रवाह में मौसमीता होती है, मानसून के मौसम में प्रवाह अधिक होता है और शेष वर्ष के दौरान प्रवाह कम होता है। इन नदियों का जलग्रहण क्षेत्र भी छोटा होता है और ये अधिकतर बारहमासी नहीं होती हैं।

इसके अलावा, हिमालयी नदियों में तलछट का भार अधिक होता है क्योंकि वे पहाड़ी क्षेत्र से निकलती हैं, जिससे तेजी से कटाव

है। प्रायद्वीपीय नदियों में तलछट का भार कम होता है।



है क्योंकि वे पहाड़ी क्षेत्र से निकलती हैं, जिससे तेजी से कटाव और तलछट का जमाव होता है। दूसरी ओर, प्रायद्वीपीय नदियों में तलछट का भार कम होता है।

|                    | हिमालयी नदियाँ  | प्रायद्वीपीय नदियाँ        |
|--------------------|---|----------------------------|
| पानी की उत्पत्ति   | पिघलते ग्लेशियर और बर्फ   | वर्षा और भूजल पुनर्भरण     |
| नदी प्रणाली की आयु | युवा और ऊर्जावान  | बूढ़ा और परिपक्व           |
| नदी का मार्ग       | छोटा और खड़ी  | लंबा और घुमावदार           |
| चैनल प्रकार        | लट  | घुमावदार                   |
| वेग और तलछट भार    | उच्च वेग, भारी तलछट भार   | कम वेग, हल्का तलछट भार     |
| स्राव होना         | उच्च, मौसमी और वार्षिक दोनों  | कम, अधिकतर वर्षा पर निर्भर |
| उदाहरण             | गंगा, ब्रह्मपुत्र,<br> महत्वपूर्ण लिंक | गोदावरी, कृष्णा, त्वेरी    |





## हिमालयी और प्रायद्वीपीय नदी के बीच मुख्य अंतर

- अपवाह बेसिन:** प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में हिमालयी नदियों के अपवाह बेसिन बड़े और अधिक विस्तृत हैं।
- उद्गम:** हिमालयी नदियों का उद्गम हिमालय के ग्लेशियरों और बर्फ से ढकी चोटियों से होता है, जबकि प्रायद्वीपीय नदियों का उद्गम पश्चिमी घाट और दक्कन के पठार से होता है।
- लंबाई:** हिमालय की नदियाँ आमतौर पर प्रायद्वीपीय नदियों से लंबी होती हैं।
- नदी की रूपरेखा:** हिमालय की नदियों की नदी की रूपरेखा युवा होती है, जिसमें तीव्र ढाल और तेज़ बहाव वाला पानी होता है। प्रायद्वीपीय नदियों की नदी की रूपरेखा परिपक्व होती है, जिसमें कोमल ढाल और धीमी गति से बहने वाला पानी होता है।
- बाढ़:** मानसून के मौसम में हिमालय की नदियों में भारी बाढ़ आने की संभावना रहती है, जबकि प्रायद्वीपीय नदियों में बाढ़ आने की संभावना कम रहती है।
- जल प्रवाह:** हिमालयी नदियों में ग्लेशियरों और बर्फ के पिघलने के कारण पूरे वर्ष जल प्रवाह तीव्र रहता है, जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ मानसून पर निर्भर रहती हैं और उनका जल प्रवाह मौसमी होता है।
- सहायक नदियाँ:** हिमालयी नदियों की कई सहायक नदियाँ और वितरिकाएँ हैं, जबकि प्रायद्वीपीय नदियों की सहायक नदियाँ कम हैं।

8. तलछट भार:

कारण तलछट

तलछट भार कम है।



महत्वपूर्ण लिंक

वर्तों के कटाव के

यद्वीपीय नदियों में





महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, हिमालय की नदियाँ पर्यटन उद्योग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

## हिमालयी नदियों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी

हिमालय पर्वत श्रृंखला सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और यांग्ज़ी सहित कई प्रमुख नदियों का घर है। ये नदियाँ सिंचाई और जलविद्युत के लिए पानी उपलब्ध कराती हैं, और परिवहन और वाणिज्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। वे अपने बेसिन में रहने वाले लोगों की सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक विकास ने प्रदूषण और इन संसाधनों के अत्यधिक उपयोग को बढ़ा दिया है, जिससे ये संसाधन दबाव में आ गए हैं।

## हिमालयी नदियों के बारे में तथ्य

1. हिमालय विश्व की कुछ सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण नदियों का घर है, जिनमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिंधु और यांग्ज़ी शामिल हैं।
2. ये नदियाँ इस क्षेत्र में रहने वाले लाखों लोगों की आजीविका और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं तथा सिंचाई, जल विद्युत और परिवहन प्रदान करती हैं।
3. गंगा भारत की सबसे पवित्र नदी है और कई हिंदू इसे देवी मानते हैं। यह भारत की सबसे लंबी नदी भी है, जो 2,500 किलोमीटर से ज़्यादा लंबी है।
4. ब्रह्मपुत्र दुनिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक है, जो चीन, भारत और बांग्लादेश से होकर बहती है। यह सबसे अप्रत्याशित और खतरनाक नदियों में से एक है, जो विनाशकारी [महत्वपूर्ण लिंक](#) प्रवण है।
5. सिंधु नदी पाकिस्तान के [महत्वपूर्ण लिंक](#) है और देश के





6. यांग्ज़ी चीन की सबसे लंबी नदी है और देश के लिए एक प्रमुख आर्थिक और परिवहन केंद्र है। यह विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों का भी घर है, जिसमें गंभीर रूप से लुप्तप्राय यांग्ज़ी नदी डॉल्फ़िन भी शामिल है।
7. इनमें से कई नदियाँ प्रदूषण, अति प्रयोग और बांध निर्माण के कारण खतरे में हैं, जिसका उन पारिस्थितिकी तंत्रों और समुदायों पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है जो उन पर निर्भर हैं।

## हिमालयी नदियों के लाभ

1. **सिंधु नदी प्रणाली:** सिंधु नदी प्रणाली पाकिस्तान और भारत में लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल प्रदान करती है।
2. **गंगा जलमार्ग प्रणाली:** गंगा जलमार्ग प्रणाली को कई हिंदू पवित्र मानते हैं और इसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों के लिए किया जाता है। यह भारत, नेपाल और बांग्लादेश में लाखों लोगों के लिए कृषि, जलविद्युत उत्पादन और पीने के पानी के लिए सिंचाई भी प्रदान करती है।
3. **ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली:** ब्रह्मपुत्र नदी प्रणाली पूर्वोत्तर भारत और बांग्लादेश में माल और लोगों के लिए एक प्रमुख परिवहन मार्ग है। यह कृषि और जलविद्युत उत्पादन के लिए सिंचाई भी प्रदान करती है।
4. **सतलुज नदी प्रणाली:** सतलुज नदी प्रणाली भारत और पाकिस्तान में प्रमुख स्रोत है [महत्वपूर्ण लिंक](#) प्रदान का एक

ऐप में जारी रखें



प्रमुख स्रोत है।

5. **ब्यास नदी प्रणाली:** ब्यास नदी प्रणाली भारत में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
6. **रावी नदी प्रणाली:** रावी नदी प्रणाली भारत और पाकिस्तान में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
7. **चिनाब नदी प्रणाली:** चिनाब नदी प्रणाली भारत और पाकिस्तान में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
8. **झेलम नदी प्रणाली:** झेलम नदी प्रणाली भारत और पाकिस्तान में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
9. **यमुना नदी प्रणाली:** यमुना नदी प्रणाली भारत में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
10. **कोसी नदी प्रणाली:** कोसी नदी प्रणाली भारत और नेपाल में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।

## हिमालयी नदियों की कमियां:-

हिमालयी नदियों की कई कमियाँ हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. **बाढ़:** भारी मानसूनी बारिश के कारण नदियाँ उफान पर आ सकती हैं, जिससे व्यापक बाढ़ आ सकती है तथा बुनियादी ढांचे और फसलों को नुकसान हो सकता है।
2. **हिमनद पिघलना:** जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय में हिमनद तीव्र गति से पिघल रहे हैं, जिससे अचानक बाढ़ और भूस्खलन हो सकता है।
3. **मृदा अपरदन:** हिमालय में तेज बहाव वाली नदियाँ मृदा अपरदन का कारण बन सकती हैं, जिससे फसलों को उगाना कठिन आती है।
4. **जल की कमी:** शुष्क मौसम के दौरान नदियों में जल स्तर



[महत्वपूर्ण लिंक](#)

गुणवत्ता में गिरावट

ऐप में जारी रखें





## प्रायद्वीपीय नदियों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी

प्रायद्वीपीय नदियाँ वे नदियाँ हैं जो भारतीय प्रायद्वीप से होकर बहती हैं, जो दक्षिण एशिया में स्थित है। इन नदियों की विशेषता उनकी छोटी लंबाई और खड़ी ढाल है, क्योंकि प्रायद्वीप उच्च राहत की भूमि है। प्रमुख प्रायद्वीपीय नदियों में गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और नर्मदा शामिल हैं। ये नदियाँ सिंचाई, पीने के पानी और पनबिजली उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण हैं। क्षेत्र में उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण, इन नदियों के जल संसाधनों का अक्सर अत्यधिक उपयोग और अति प्रयोग किया जाता है, जिससे पानी की कमी और पर्यावरणीय गिरावट होती है।

## प्रायद्वीपीय नदियों के बारे में तथ्य

1. भारत की प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्यतः पूर्व की ओर बंगाल की खाड़ी और अरब सागर की ओर बहती हैं।
2. वे मानसून की बारिश से पोषित होते हैं तथा उनका प्रवाह पैटर्न मौसमी होता है, मानसून के मौसम में जल स्तर उच्च होता है तथा शुष्क मौसम में निम्न स्तर होता है।
3. प्रमुख प्रायद्वीपीय नदियों में गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और महानदी शामिल हैं।
4. गोदावरी नदी सबसे लंबी प्रायद्वीपीय नदी है, जो 1,450 किलोमीटर से अधिक तक फैली हुई है।
5. प्रायद्वीपीय नदियों में से कई का उपयोग सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल के स्रोत के रूप में बड़े पैमाने पर किया जाता है।
6. प्रायद्वीपीय नदियाँ नौवहन के लिए उपयुक्त नहीं हैं क्योंकि वे अधिकांशतः  गीले परिवर्तनशील हैं।
7. कुछ नदियों में अनुपचारित सापण और औद्योगिक अपशिष्ट



महत्वपूर्ण लिंक





8. भारत में प्रायद्वीपीय नदियों का भी समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है, तथा इनके किनारों पर कई प्राचीन मंदिर और तीर्थ स्थल स्थित हैं।

## प्रायद्वीपीय नदियों के लाभ

1. **गोदावरी नदी प्रणाली:** गोदावरी नदी प्रणाली मध्य और दक्षिणी भारत के लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल प्रदान करती है।
2. **महानदी नदी प्रणाली:** महानदी नदी प्रणाली पूर्वी भारत में लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल प्रदान करती है।
3. **पेन्नर नदी प्रणाली:** पेन्नर नदी प्रणाली दक्षिणी भारत में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
4. **कृष्णा नदी प्रणाली:** कृष्णा नदी प्रणाली दक्षिण भारत और पश्चिमी महाराष्ट्र के लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल उपलब्ध कराती है।
5. **कावेरी नदी प्रणाली:** कावेरी नदी प्रणाली दक्षिण भारत में लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल उपलब्ध कराती है।
6. **तुंगभद्रा नदी प्रणाली:** तुंगभद्रा नदी प्रणाली दक्षिणी भारत में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
7. **वैगई नदी प्रणाली:** वैगई नदी प्रणाली दक्षिण भारत में लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई और पेयजल उपलब्ध कराती है।
8. **भीमा नदी प्रणाली:** भीमा नदी प्रणाली दक्षिणी भारत में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत है।
9. **साबरमती नदी प्रणाली:** साबरमती नदी प्रणाली पश्चिमी भारत में लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई और पेयजल उपलब्ध कराती है।



महत्वपूर्ण लिंक





भारत में लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई और पेयजल उपलब्ध कराती है।

10. **नर्मदा नदी प्रणाली:** नर्मदा नदी प्रणाली मध्य भारत के लाखों लोगों को कृषि के लिए सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन और पेयजल प्रदान करती है।

## प्रायद्वीपीय नदियों की कमियां:-

भारत में प्रायद्वीपीय नदियों की कई कमियाँ हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. **मौसमी परिवर्तनशीलता:** प्रायद्वीपीय क्षेत्र की कई नदियाँ मौसमी हैं, शुष्क मौसम के दौरान इनका प्रवाह कम होता है, जिससे सिंचाई और पीने के प्रयोजनों के लिए पानी की कमी हो सकती है।
2. **प्रदूषण:** प्रायद्वीपीय नदियों के जलग्रहण क्षेत्र में औद्योगिक और शहरी विकास से नदियों का प्रदूषण हो सकता है, जिससे जल उपभोग और जलीय जीवन के लिए असुरक्षित हो सकता है।
3. **संसाधनों का अति प्रयोग:** सिंचाई, जल विद्युत और पेयजल के लिए नदियों के अति प्रयोग से संसाधनों का हास हो सकता है तथा पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंच सकता है।
4. **मृदा अपरदन:** प्रायद्वीपीय क्षेत्र में तेज बहाव वाली नदियाँ मृदा अपरदन का कारण बन सकती हैं, जिससे फसलों को उगाना कठिन हो जाता है और भूमि की गुणवत्ता में गिरावट आती है।
5. **बाढ़:** प्रायद्वीपीय क्षेत्र की नदियाँ भारी मानसून को संभालने में सक्षम नहीं हैं, इसलिए बाढ़ आ सकती है तथा बुनियादी ढांचे और फसल **महत्वपूर्ण लिंक** है।
6. **बांध और बैर** देयों पर कई बांध

ऐप में जारी रखें





उगाना कठिन हो जाता है और भूमि की गुणवत्ता में गिरावट आती है।

5. **बाढ़:** प्रायद्वीपीय क्षेत्र की नदियाँ भारी मानसून को संभालने में सक्षम नहीं हैं, इसलिए बाढ़ आ सकती है तथा बुनियादी ढांचे और फसलों को नुकसान हो सकता है।
6. **बांध और बैराज:** प्रायद्वीपीय क्षेत्र की नदियों पर कई बांध और बैराज बनाए गए हैं, जिससे जल प्रवाह कम हो सकता है और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान हो सकता है, तथा नदी पर निर्भर लोगों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

## हिमालयी और प्रायद्वीपीय नदियों के बीच समानताएं

हिमालय और प्रायद्वीपीय दोनों नदियाँ भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा हैं और उनकी विशेषताएँ समान हैं। दोनों का उद्गम स्थल पहाड़ी क्षेत्र हैं, हिमालय की नदियाँ हिमालय से निकलती हैं और प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट से निकलती हैं। दोनों प्रकार की नदियों में जल प्रवाह में मौसमी भिन्नताएँ होती हैं, मानसून के मौसम में प्रवाह अधिक होता है और शुष्क मौसम में प्रवाह कम होता है। दोनों प्रकार की नदियाँ विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों के जीवन का भी पोषण करती हैं और सिंचाई, बिजली उत्पादन और परिवहन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

## मुख्य अंतरों के लिए और अधिक लेख

☰ महत्वपूर्ण लिंक

➤ बीपीओ और कपाजा क बाच अतर

ऐप में जारी रखें

10 / 10

